युवा महोत्सव में लोक नृत्यों ने बांधा समा

गुजरात की भक्ति, महाराष्ट्र की शक्ति और राजस्थान की मस्ती ने ढलती शाम में ऐसा समां बांधा कि सुखाड़िया विवि के ऑडिटोरियम में तिल धरने की जगह नहीं रही। मेजबान मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय की प्रस्तुति चरी नृत्य में तो संतुलन और करतब की ऐसी साधना की गई कि बाहर से आए प्रतिभागी दांतों तले अंगुली दबाने को मजबूर हो गए तो दर्शकों की हूट भी पल भर विश्राम नहीं ले पाई।

पश्चिमी क्षेत्र अंतर विवि युवा महोत्सव में तीसरे दिन शाम को लोकनृत्यों की प्रतियोगिता में सबसे पहले गुजरात ने भक्ति में मस्ती के सुर छेड़े तो अगली प्रतिभागी विक्रम विवि उज्जैन ने 'म्हारो हैलो सुणो जी रामा पीर सा' उसे ताल दिया। अभी दर्शक इन दोनों विश्वविद्यालयों की प्रस्तुति की दाद दे ही रहे थे कि मुम्बई विश्वविद्यालय ने छबिना ढोल नृत्य से हर कदम को थिरकने को मजबूर कर दिया। इसके बाद आया मौका हरि सिंह गौड़ विवि सागर का, जिसने बुंदेलखण्डी बधाई नृत्य में जहां दुल्हन की डोली में विदाई करवाई तो 'जन्म लियो रघुराई अवध में' से श्रद्धा भाव से भर दिया। अब जहां हर कोई मस्ती में चूर हो और उस समय राजस्थान की सपेरा जाति के कालबेलिया लोक नृत्य 'काल्यो कूद पड्यो मेले में' की धमक आ जाए तो फिर कहना ही क्या था।

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर की छात्राओं के इस लोकनृत्य के बाद तो ऑडिटोरियम खचाखच भर गया और हर जगह से 'एमएलएसयू का धूम-धड़ाका' की आवाज गूंजने लगी। मजबूरी में आयोजकों को मेजबान विवि को प्रस्तुति के लिए पहले आमंत्रित करना पड़ा। रंग-बिरंगी लाइटस के मध्य जब यहां की छात्राओं ने एक के ऊपर एक चरी रखते हुए घूमर डाली तो हर हाथ ताली बजाने को मजबूर हो गया। प्रस्तुति में पहले थाली पर, फिर लोटे पर और बाद में बिखरे हुए कांच पर प्रतिभागी छात्रा ने जमकर ठुमके लगाकर दर्शकों के साथ जजों का भी दिल जीत लिया। इसके बाद भी कभी जनजाति के पिरामिड वाले नृत्य चले तो कभी आदिवासी डांग नृत्य रात आठ बजे के बाद तक चलते रहे। इस प्रतियोगिता में 31 विश्वविद्यालयों के लगभग 300 से ज्यादा प्रतिभागियों ने भाग लिया।

बनस्थली विद्यापीठ की छात्रा पूरे लय में

राजस्थान पत्रिका
गुरुवार 8 दिसम्बर 2011
1